International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 3, May.-June, 2024, pp: 88-89 www.ijhssm.org

फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में लोक जीवन की छवि

डॉ. सगीर अहमद
विद्यालयअध्यापक, गया (बिहार)
ईमेल-*sageerahmadf90@gmail.com*

Date of Submission: 24-04-2024 Date of Acceptance: 02-05-2024

शोध-सार

फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियांऐसी कहानियांहैंजिसमें लोक जीवन का रंग रचा एवं बसाहै। एक खास विचारधारा के अंतर्गत लिखनेके कारण आंचलिकतावादी कहानीकार एवं उपन्यासकार कहलाए इनकीकहानियों में नए सभ्यचारों के आगमन के बाद किस प्रकार लोक जीवन में व्यापक बदलाव देखने को मिलता है दिखाई देता है। जहां एक तरफ नई चीजों को लेकर लोकजीवनमेंउत्सवधर्मिता देखी जाती है। तो वहीं दूसरी तरफ लोक परंपराओं की मिटतीछविके प्रति चिंताभीदेखी जाती है।

बीजशब्द–लोकजीवन, नयेसभ्यचार, उपेक्षित वर्ग,हाशियेका समाज, आंचलिकता।

प्रस्तावना-

हिंदी आंचलिक कथाधारा में फणीश्वरनाथ रेणु का महत्वपूर्ण स्थान है। एक विशेष कथा धारा की लीक से हटकर जिस प्रकार अपनी कहानियों में लोक रंग की छवि को, जो शहरीचकाचौंध में धूमिल होता जा रहा था को बेहतरीन ढंग से चित्रित किया है।क्योंकि जिस दौर में स्वतंत्रता के बाद नई कहानी आंदोलन ने शहरी प्रवेश की एकाकीपन, संत्रास, कुंठा,अजनबियत की पृष्ठभूमि पर केंद्रित करते हुए तमाम लेखक कहानियां लिख रहे थे वहींरेणुगाँवोकी विलुप्त होती लोक जीवन की छवियों को केंद्रित करते हुए कई महत्वपूर्ण कहानियांलिखी हैं जो उनके कहानी संग्रहों(ठुमरी1959,एक आदिम रात्रि की महक1967, अग्निखोर1973, एक श्रावणी दोपहर की धूप1984, अच्छे आदमी1986) मेंकुछऐसीकहानियांहैंजोलोकरंगकीछविकोप्रस्तुतकरतेहैंजैसे- रसप्रिया, तीर्थोदक,ठेस, पंचलाइट, सिरपंचमी का सगुन, तीसरी कसम अर्थात मारे गए गुलफाम, लाल पान की बेगम, पहलवान की ढोलक,संवदियाआदिइन कहानियों में 'रेणु' ने बहुत ही बारीक ढंग से लोकरंग की छवि को अंकित किया है।

इस प्रकार यदि देखा जाए तो ठुमरी कहानी संग्रह जिसका प्रकाशन 1959 ई. में हुआ था उसमें संकलितकई कहानियों में 'रसप्रिया' कहानी महत्वपूर्ण स्थान रखती हैइस कहानी में रेणुने पचकौड़ी मिरदंगिया के माध्यम से समाज में विलुप्त होती विदापत और उस अवसर पर गाए जाने वाले शादी, विवाह, मुंडन गीत किस प्रकार आर्थिक तंगी और शहरी पलायनकेद्वारा विलुप्त होते जा रहे हैं, चिंता दिखती हैरेणुकहानीकेमाध्यमसेलिखतेहैंकि–"पंद्रह-बीससाल पहले तक विद्यापति नाम की थोड़ी पूछ हो जाती थी।शादी-ब्याह,यज्ञ उपनैन,मुंडन छेदनआदि शुभ कार्यों में विदापतियामंडली की बुलाहट होती थी... गांव के बड़े-बूढ़ेकहते हैं–"अरे पचकौड़ी मिरदंगिया का भी एक जमाना था।"[1]किंतु समय की बदलती परिस्थितियों ने उसे समाज ने धीरे-धीरे भुला दिया है अब वही मिरदंगिया भिक्षाटनकरता है और गांव जवारके बबुआननंदूबाबू के यहां तथा आसपास के लोगों के यहां भिक्षा मांग कर वह गुजाराकरताहै।किंतु रेणुने इस लोक कलाकार की अपेक्षा नहीं की है। इतना विवश होने के बावजूद भी मिरदंगिया के कलाकी बखान करते हैं। उसे सच्चे सेवक के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं तथा मोहनाके माध्यम से कलाकाट्रांसफार्मेशनकरना चाहते हैं। जब मृदंगिया लड़की मुहा मोहनाको देखताहै तो अनायास हीउसके मुंह से निकलता है अपरूप- रूप!रेणुइस क्षण का वर्णन करते हुए लिखते हैं- "धूलपड़े कीमती पत्थर को देखकर जौहरी की आंखों में एक नई झलक झिलमिलागयीअपरूप-रूप!"[2]वास्तव में देखा जाए तो रेणुने एक सच्चे पारखी की भांति लोक समाज में विलुप्त होती इस परंपरा को लेखनीके माध्यम से सजीव कर दिया है।

इसी प्रकार लेखक ने 'तीर्थोदक' कहानी के माध्यम से लोकसमाज मेंबूढ़ोंके मन में चली आ रही तीर्थ की लालसा को उजागर किया है। आज का आधुनिक समाज जहां एक तरफ रोजगार के पलायन नए-नए सपने देखने, धर्म-समाज से कटकर जीवन में कुछ सजोनेकिजुगतमें लगा रहता है धर्म को ढकोसलामानताहै,वहींरेणुप्रगतिशील विचार रखते हुए भी लल्लूकी मां के माध्यम से तीर्थ की लालसा को उजागर किया है। वह लिखते हैं-" नाती पोते मेरे गंगा नहा आए और मैं अभागी ऐसी की गंगा की कौन कहे पौषी-पूर्णिमा में कभी कोसी की किसी गढ़हियामें भी एक डुबकी नहीं लगा पाई। "[3]और इस प्रकार रोकनेटोकनेझिड़कियां सुनने के बाद भी लल्लूकी मां यात्रा पर निकल जाती है।वास्तव में देखा जायतोरेणुने सामाजिक परंपरा में रची बसी लोक जीवन की छवि को बड़ी गहराई से उकेरा है और एक सजक कहानीकार की भांतिरेणुने समाज के अंतर्मन के विभिन्न पहलुओं को छुआ है।

इसी प्रकार ठुमरी में संकलित कहानी 'ठेस' है जिसमें रेणुने एक स्वाभिमानी कलाकार (जो चिकवपाटीबुनताहै) का चित्रण किया है।जिसकी कलाएं आधुनिक औद्योगीकरण का शिकार होकर रह गई है और धीरे-धीरे विलुप्त के कगार पर हैंरेणुने इस कहानी के पात्र 'सिरचन' के माध्यम से यह बताने की कोशिश की है कि किस प्रकार आधुनिकतावादी दौरमेंविकसित होते मॉल कल्चर, ई-बाजार आदिके माध्यम से एक कलाकार बेगार ही नहीं बेकार भी हो जाता है। उस पर चिंता प्रकट करते हैं रेणुलिखते हैं-"खेती-बाड़ी के समय गांव के किसान'सिरचन' की गिनती नहीं करते। लोग उसको बेकार ही नहीं बेगारसमझते हैं।"[4]

बढ़ते यांत्रिकीकारण एवं औद्योगिकरण नेकिस प्रकार गांव समाज में पनप रही लोक संस्कृति को लीलरही है व्यापक चिंता दिखती है।रेणुलिखते हैं कि एक समय था जब सिरचनके पास चिक-पाटीके लिए दूर-दूर से लोग आते थे।घंटोंलाइन लगाकर अपनी फरमाइश पूरी करते थे। किंतु आज परिस्थितियों ने उसे बेकार एवं बेगार बना दिया है-"आज सिरचन को मुफ्तखोर, कामचोर या चटोरकहलेकोई।एक समय था जबकि उसकी मढ़ैया के पास बड़े-बड़े बाबू लोगों की सवारियां बंधी रहती थीं।उसे लोग पूछते ही नहीं थे उसकी खुशामद भी करते थे।"[5]रेणुअपनी इन कहानियों के माध्यम से समाज में विलुप्त होती एवं उपेक्षा का शिकार होती कलाओं को बहुत ही सजग ढंग से उकेरा है। जिसमें एक तरफ लोक परंपराकिविलुप्त होती चिंता है तथा दूसरीतरफ कलाकार का स्वाभिमान है जिससे वह कभी समझौता नहीं करता है।

इसी प्रकार एक उत्सवधर्मीकहानी 'पंचलाइट' है... जिसमें गांव/पंचायत में आई पंचलाइट हैऔर दूसरी तरफ समाज की सुचिता है।प्रस्तुत कहानी में लेखक भोले-भाले गांव के लोगों का चित्रण किया है। लेखक पंचलाइट के माध्यम से भोले भाले गांव के लोगों में उत्साह की जो चमक है वह देखने लायक है कि जहां एक तरफ हमारा समाज धीरे-धीरे बदलता जा रहा है शहरी प्रवेश अपना हस्तक्षेप दिखारही है वहीं इन लोगों का लोक जीवन कितना उत्सवधर्मी है देखते ही बनता हैरेणुलिखतेहैं–"दंड-जुर्मानेके पैसे जमा करके महतोटोली केपंचों ने पेट्रोमैक्स खरीदा है इस बार रामनवमी के मेले में।...टोलाभर के लोग जमा हो गए।औरत, मर्द, बूढ़े, बच्चे सभी काम-काजछोड़कर दौड़े आए "चल रे चल! अपनापंचलैटआयाहै,

पंचलैट। "[6]प्रस्तुत कहानी में रेणुने बहुत ही सहज ढंग से लोक जीवन का चित्रण किया है। जहां के लोग छोटी-छोटी सी खुशी में भी मिल जुल कर किस प्रकार उत्सवधर्मी बनाकर आनंद के क्षणोंको जीते हैं।

इसी तरह 'सिरपंचमीकासगुन' कहानीमेंलोक समाज में परंपरागत रूप से चली आ रही गृहस्थ किसानों द्वारा फसल आने के पश्चात दिया जाने वाला 'खैन'व्यवस्था का चित्रण किया है। हमारे समाज में परंपरा रही है कि जो वर्ग चाहे वह कुम्हार हो,बढ़ईहो, लोहार, नाई, धोबी, रविदास हो। जो वर्ष भर हमारे लिए कोई ना कोई कार्य करता है उसकोफसल आने पर कुछ हिस्सा अनाज का दिया जाता है। इस कहानी में रेणुजी ने अन्य कथाकारों की परंपरा से हटकर एक ऐसे वर्ग केमाध्यम से चित्रण किया है।जिस पर प्रायःकिसी का भी ध्यान नहीं जाता है।

प्रस्तुत कहानी में रेणुने 'कालू कमार'(जो की एक लोहार है) और सिंघाय (एक किसान) के माध्यम से ग्रामीण जीवन की एक ऐसी परंपरा का चित्रण किया हैजिसमें सिंघायद्वारा फसल आने के बाद 'खैन'ना दिए जाने के कारण कालू कमार ऐनसिर पंचमी के दिन ही उसके हल का फालटेढ़ा कर देता है।प्रायःऐसीमान्यता है कि सिर पंचमी के दिन यदि खेती करने की शुरुआत की जाए तो फसल अच्छी होगी। आज उसीशुभअवसर पर सिंघाय, कालू कमार के यहां जाता हैजहाँवहखैननदिएजानेकेकारणउसकेहलकीफालकोटेढ़ाकरदेताहै।उसदिनकाचित्रणक रतेहुएरेणुलिखतेहैं-"सिरपंचमीकेदिनसभी किसान अपने -अपने सगुन की ही बात सोचते हैं।उस दिन किसी से बेकार रारना हो, किसी की नजर ना लग जाए, कोई छींकन दे,लुहरसारसे लौट कर बैलों को नहलाकर सींगमें तेल लगाया जाता है। हलकेहरेसपर चावल के आटे की सफेदी की जाती है। औरतें उसपर सिंदूर से मां लक्ष्मी के दोनों पैरों की उंगलियां अंकित करती हैं। गांव से बाहर परती जमीन पर गांव भर के किसान अपने हल-बैल औरबाल बच्चों के साथ जमा होते हैं। नई खुरपी से सवा हाथ जमीन छीलकर केले के पत्ते पर अक्षत-दूध और केले का मोती-प्रसाद चढ़ाया जाता है। धूप-दीप देने के बाद हल में बैलों को जोतकर पूजा के स्थान से जुताई का श्री गणेश किया जाता है।"[7]इस दिन की शुरुआत करने के लिए जवार के सारे किसानलोहार के यहां जाते हैं और फसल के अनुसार कुछ अनाज देते हैं। बदले में लोहार खुश होकर उनके हलों के फाल को पीटताहै। उस दिन गांव में पूरा उत्सव का माहौल होता है। इस कहानी के माध्यम से रेणुने गांव समाज में पलनेवाली छोटी-छोटी खुशियों का चित्रण किया है। जिसमें लोग छोटी-छोटी खुशियों में शामिल होकर लोक परंपरा को उत्सव धर्मी बना देतेहैं।

इसी प्रकार लोकसमाज की छवि को प्रस्तुत करती कहानी 'तीसरी कसम अर्थात मारे गए गुलफाम' है। प्रस्तुत कहानी में रेणुजी ने हीरामन (गाड़ीवान)और हीराबाई (नाच कंपनी की नर्तकी) के माध्यम से हीरामन के भोलेपन एवं हीराबाई के माध्यम से लोक समाज का मनोरंजन कैसे कराया जाता है चित्रित किया है।प्रायःगांवोंमें मनोरंजन के साधन न होने के कारण लोग लोकसमाज में वर्षों से चली आ रही मेलों में नाच-गाने की परंपरा को बहुत ही संजीव ढंग से चित्रित किया है।रेणुहीरामन की भाषा को निहायत ठेठदेहाती बुलवाकर उसके भोलेपन की प्रतीत कराते हैं तथा उसके निश्छल मन में प्रेम का रागउपजाकर कहानी की नई दिशा बदलते हैं। मधुरेश के शब्दों में-"रेणु की कहानियों में पात्रों और परिवेशकी संशलिष्टघुलावटउनकी उल्लेखनीयविशेषता है।"[8]

इसी प्रकार 'ठुमरी' कहानी संग्रह में संकलित एक और कहानी 'लाल पान की बेगम' है लेखक ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से गांव समाज की पनपनेवाली छोटी-छोटी खुशियों, नोक-झोक को समाहित करते हुए एक बेहतरीन कहानी लिखी है। कहानी का प्रत्येक पात्र बिरजू की मां, मखनी फुआ, जजंगीकीपतोहूको इस तरह से चित्रित किया है जैसे वह एक दूसरे के दुश्मन हो। किंतु गंवईगंधकी महकनेउसेएक उत्सव धर्मी माहौल पैदा कर दिया है। कहानी के माध्यम से लेखक यह दिखाता है कि जब भी कोई अवसर, चाहे वह शादी ब्याह हो या फसल पकने का समय हो गांव एवं पूरा लोक समाज कैसे अपने आप में एक उत्सव के रूप में बदल जाता है। दिखाने का प्रयास किया है।रेणुलिखते हैं-"क्यों बिरजूकी मां नाच देखने नहीं जाएगी क्या?"

बिरजू की मां शकरकंद उबालकर बैठी मां ही मन कुढ़रही थी अपने आंगन में। 7 साल का लड़का बिरजू शकरकंद के बदले तमाचे खाकर आंगन में लोट-लोटकरसारी देह में मिट्टी मर रहा था।"[9]उधर बप्पा द्वारा गाड़ी समय पर ना आने से बिरजू मन ही मन इमली पर रहने वाले जिन्नबाबा की मन्नतें कर रहा है। गांव की स्त्रियां बिरजू की मां का मजाक उड़ा रही हैं। किंतु गाड़ी आ जाने के कारण किस प्रकार सब गिले-शिकवे भुलाकर बिरजू की मां सबको मेला दिखाने ले जाती है उसके बड़प्पन को दर्शाता है।

इसी तरह रेणु की एक अन्य कहानी है 'पहलवान की ढोलक' यह कहानी अपने अंदर मलेरिया और हैजेजैसीदुर्लभ बीमारियों में मर रहे लोगों की मार्मिकता तथा करुणा को समेटे हुए है। कहानी का प्रमुख पात्र 'लुट्टनसिंह' है जो कभी दरबारी पहलवान हुआ करता था। किंतु नएसभ्यचारों और आधुनिकताओं ने उन्हें कैसे दरबार से बाहर निकाल फेंका जिसके कारण उसके दोनों पुत्र और स्वयं लुट्टनसिंहदर-दर भटकने के लिए मजबूर हो गए और हैजेएवं मलेरिया की महामारी ने एक-एक करके पुत्रों और स्वयं लुट्टनपहलवान को लील गए। फणीश्वरनाथ रेणु ने कहानी के माध्यम से चित्रण करते हुएलिखाहैकिकिस प्रकार लोकपरंपरा में पहलवानी जैसे खेल और पहलवानआदरकी दृष्टि से देखे जाते थे। किंतु आधुनिक सभ्यताओं ने उन्हें बाहर का रास्ता दिखादियाहैसोचनेपरमजबूरकरदेताहै।पहलवान और उसके बच्चों का अंत ऐसालगताहैजैसे किसी लोकपरंपरा का अंत होगयाहै।

आज हमारा समाज भले ही आधुनिकताओं के रथपर सवार होकर आगे बढ़ रहा है। किंतु किसी समय हमारे समाज में कुछ ऐसे वर्गों का खासामहत्व हुआ करता था। उसमें संवदिया की महत्वपूर्ण भूमिका होती थीरेणुने इसी नाम से कहानीभीलिखी है। जिसमें संवदिया के महत्व को दर्शाया है। संवदिया ही ऐसा व्यक्ति होता था जो सुख-दुख, तीज- त्यौहार, जन्म-मरणआदिकी सूचनादूर-दूरकेसंबंधियों के यहां लेकर जाताथाऔर उसका भरपूर स्वागत होता था। किंतु आज ऐसी परंपराएं धीरे-धीरे विलुप्त सी हो गई हैं। संचार माध्यमों ने इस पर ज्यादा ही हस्तक्षेप किया है।

वास्तव में देखा जाए तो रेणुने अपनी कहानियों के माध्यम से सामाजिक लोकछवि को बड़ी गहराई से उकेरा है। ऐसा प्रतीत होता है कि रेणुकितने करीब से समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले वर्गों का कितना ध्यान रखते हैं जो नए सभ्यचारों के पनपनेसे उपेक्षित से हो गए हैं।

संदर्भ-

1- ठुमरीकहानीसंग्रह, फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण सन 2000, पहलीआवृत्ति 2011।पृ. 11
2- वही, पृ. 9
3- वही, पृ.27
4- वही, पृ.51
5- वही, पृ.51
6- वही, पृ.77
7- वही, पृ. 85
8- हिंदीकहानीकाविकास,मधुरेश,सुमित प्रकाशन इलाहाबाद,पांचवा संस्करण सन 2008, पृ.91
9- ठुमरी कहानी संग्रह,फनीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण सन 2000,पहलीआवृत्ति 2011, पृष्ठ 137